

Sansara Ko Sanskrita Ki Dena

——
संसार को संस्कृत की देन

——
Document Information



Text title : Sansara Ko Sanskrita Ki Dena

File name : sansArakosanskRRitakIIdena.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



Sansara Ko Sanskrita Ki Dena

संसार को संस्कृत की देन



संस्कृत ने ही सबसे पहले जग को लौंया ज्ञान दिया है,
 इसने ही तो “सोऽलमस्मि” का शुभ सन्देश मलान दिया है । ०
 “मा लैः” की शिक्षा हे इसने ही लमको निर्लोक बनाया,
 नित्य “अदीनाः स्याम” पढःाकर लमें दैन्य को दूर लगाया,
 “लशावास्यमिदं” कल सलमें लश्वर-साक्षात्कार कराती,
 यही लमें नर से नारायण लनने का है पाठ पढःाती,
 लमें “तत्त्वमसि” कल इसने ही ललाशक्ति का दान दिया है,
 संस्कृत ने ही सबसे पहले जग को लौंया ज्ञान दिया है । १
 “आचारः प्रथमो धर्मः” का इसने ही आदर्श सिभाया,
 इसने ही “लूमैव सुषुं” का सबसे पहले तत्त्व लताया,
 “दृश-जाति का रुप-रंग का लेदलाव मिथ्या है सारा-
 अेक-अेक प्राणी वसुधा का लन्धु और परिवार लमारा”
 इस लदलत्ता का संस्कृत ने ही नर को वरदान दिया है,
 संस्कृत ने ही सबसे पहले जग को लौंया ज्ञान दिया है । २

– रययिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sansara Ko Sanskrita Ki Dena

pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

